1830 ई० की क्रान्ति के कारण एवं परिणाम

Course - M. A. History, Part - II, Paper - XVI; Prepared by - Dr. P. K. Poddar

जुलाई, 1830 की फ्रांस की क्रान्ति का इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस क्रान्ति का सूत्रपात चार्ल्स दसवें की स्वेच्छाचारी नीति के कारण हुआ। लुई अठारहवें की मृत्यु के बाद 1824 में वह फ्रांस की गद्दी पर आया था। वह उदारवाद का विरोधी था। वह राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास करता था और कहा करता था कि इंगलैंड के राजा की तरह शासन करने से तो मैं लकड़ी फाड़ना अधिक पसंद करूँगा। वह पुरातन व्यवस्था को फिर से कायम करना चाहता था। सिंहासनारूढ़ होते ही उसने राजसत्ता के विरोधियों को नाश करना आरम्भ कर दिया।

अमीरों को क्रान्ति से जो हानि हुई थी, उसके लिए उनको हरजाना देने के लिए एक लम्बी रकम स्वीकृत हुई। कुलीनों को राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त किया गया और सभी स्वतंत्रताओं पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिये गये। इसी प्रकार चर्च और पादरियों के पुराने विशेषाधिकारों को फिर से प्रतिष्ठित किया गया। इस तरह क्रान्ति द्वारा सिद्धान्तों को विनष्ट करने में चार्ल्स ने कोई भी कमी नहीं छोड़ी और प्रतिक्रिया का राज्य कायम करने में उसने मेटरनिक को भी हरा दिया। ऐसे-ऐसे कानून पास करवाये जिनसे जनता के सारे अधिकार छिन गये। 1827 में उसने व्यवस्थापिका सभा को भी भंग करा दिया। चार्ल्स के इस स्वेच्छाचारी निरंकुश शासन से सम्पूर्ण फ्रांस में हलचल मच गयी।

1827 में राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा का फिर से चुनाव हुआ। चार्ल्स दशम को चिन्ता थी कि कहीं प्रजातंत्रवादी दल बहुमत में न आ जाये। इसलिए उसने मतदाताओं को बलपूर्वक राजसत्तावादियों के पक्ष में मत देने के लिए बाध्य किया। किन्तु इस चुनाव में कट्टर राजसत्तावादी बड़ी बुरी तरह हारे।

चार्ल्स ने इस सभा को भंग कर फिर से चुनाव करवाया, किन्तु पहले की तरह ही परिणाम हुआ। एक बार और चुनाव हुआ, किन्तु कट्टर राजसत्तावादियों को बहुमत न प्राप्त हो सका। अब उसने अवैधानिक तरीका अपनाया और पालिग्नैक को अपना प्रधानमंत्री बनाया। वह एक प्रतिक्रियावादी था। 26 जुलाई 1830 को पालिग्नैक के कहने में आकर राजा ने चार आर्डिनेंस जारी किये जिनके अनुसार (1) प्रेस की स्वतंत्रता छीन ली गयी (2) चैम्बर ऑफ डेपुटीज भंग कर दिया गया (3) निर्वाचन पद्धति बदल दी गयी और मतदाताओं की संख्या कम कर दी गयी। लगभग 75% मतदाताओं का नाम पुरानी सूची से काट दिया गया। अब केवल कुलीन वर्ग के लोगों को ही मतदान का अधिकार दिया गया। (4) नये कानून के अनुसार सितम्बर में निर्वाचन करने की घोषणा की गयी।

पालिग्नैक द्वारा उद्घोषित ये चार आर्डिनेंस जनता के लिए चुनौती के समान थी। प्रजातंत्रवादियों, उदारवादियों और स्वतंत्रता के प्रेमियों ने इस चुनौती को स्वीकार कर जनता को सशस्त्र विद्रोह करने को उत्साहित किया। फ्रांस भर में विद्रोह की ज्वालायें प्रदीप्त हो गयीं। 26 जुलाई को ही पेरिसवासियों ने सड़कों पर जगह-जगह मोर्चाबन्दी कर ली। राजा की सेना ने उनका मुकाबला किया, किन्तु सेना की सहानुभूति भी विद्रोहियों के साथ थी और उन्होंने उनका साथ देना शुरू किया। सम्राट की भीषण पराजय हुई और क्रान्तिकारियों ने पेरिस पर अधिकार कर लिया। चार्ल्स ने क्रान्तिकारियों से समझौता कर लेना ठीक समझा और आर्डिनेंस रद्द करने का आश्वासन दिया, लेकिन अब उसका समय नहीं था। अंत में निराश होकर

चार्ल्स को पेरिस छोड़ कर भाग जाना पड़ा और उसके दमनकारी शासन का अन्त हो गया।

सन् 1830 ई० की क्रान्ति फ्रांस के इतिहास में ही नहीं बल्कि यूरोप के इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण घटना है। इस क्रान्ति के अनेक परिणाम हुए और करीब-करीब यूरोप के सभी देशों पर इस क्रान्ति का गहरा प्रभाव पड़ा।

ऊपर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्रान्ति ने फ्रांस में कोई विशेष परिवर्तन नहीं लाया। बूर्बों वंश की बड़ी शाखा को हटाकर उसके स्थान पर ओर्लियन्स शाखा की स्थापना की गयी। प्रोफेसर हेज के शब्दों में "बूर्बों वंश के सफेद झंडे का स्थान क्रान्तिकारी तिरंगे झंडे ने लेलिया और निरंकुश राजतंत्र के स्थान पर लोकप्रिय प्रभुसत्ता की स्थापना हुई।" इस क्रान्ति से एकतंत्र अन्त नहीं हुआ और विधान के परिवर्तन भी नाममात्र को। राजतंत्र पुनः स्थापित हो गया किन्तु यह दैवी सिद्धान्त पर आधारित राजतंत्र नहीं, वरन् जनता द्वारा स्वीकृत संविधान पर आधारित एकतंत्र था। अब राजा अध्यादेश नहीं जारी कर सकता था और प्रेस पर से भी पाबन्दी हट गयी। धार्मिक सहिष्णुता कायम हो गई। नये कानूनों के प्रस्ताव करने का अधिकार व्यवस्थापिका सभा को दे दिया गया, फिर भी मताधिकार अभी बहुत ही सीमित रहा।

इन सबों के बावजूद, इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गये। फ्रांस की गद्दी पर आर्लियन्स वंश ~~की स्थापना~~ का अधिकार स्थापित

हो जाने के कारण वियना कांग्रेस द्वारा अपनाये हुए 'लेजीटिमेसी' के सिद्धान्त को सदा के लिए नष्ट कर दिया गया। राजा के दैवी सिद्धान्त का अन्त हो गया और उसकी जगह पर लोकाधिकार के सिद्धान्त की स्थापना हुई। कुलीनों और पादरियों के विशेषाधिकार समाप्त हो गये। इस क्रान्ति के फलस्वरूप समानता, धर्म निरपेक्षता, वैधानिक शासन आदि क्रान्तिकारी भावनाओं की नींव मजबूत हो गई। कैथोलिक चर्च, जिसका महत्त्व चार्ल्स दशम् ने बहुत बढ़ा दिया था, को भी इस क्रान्ति से गहरा आघात पहुँचा। यह भी तय हो गया कि 1830 के पूर्व की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था अब किसी भी प्रकार पुनः स्थापित नहीं की जा सकती थी। संक्षेप में 1830 ई० की क्रान्ति 1789 ई० की क्रान्ति की पूरक मात्र थी।

प्रोफेसर हेज के अनुसार, "फ्रांस की जुलाई क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम मध्यम वर्ग की विजय थी।" इसी वर्ग ने 1789 में महान क्रान्ति का संचालन किया था और इसी वर्ग ने 1794 ई० में मजदूरों के बढ़ते हुए प्रभाव से क्रान्ति की रक्षा की थी। 1815 और 1830 के बीच विशेषाधिकार वर्ग की चेष्टा से इस वर्ग के हित पर खतरा उत्पन्न हो गया था। अतः मध्यम वर्ग पुनः अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय हुआ। उसने प्रतिक्रियावादी शासकों को भागने पर विवश किया और श्रमजीवी वर्ग को चुप करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

इस क्रान्ति के द्वारा फ्रांस में वैध राजसत्ता स्थापित हुई। वियना के कांग्रेस ने

जो निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता का युग प्रारम्भ किया था उसपर इस क्रान्ति द्वारा भीषण कुठाराघात हुआ। मेटरनिख के दैवी अधिकार के सिद्धान्त को इस क्रान्ति ने निर्बल बना दिया और अब वही शासक हो सकता था जिसको जनता चाहे।

पेरिस में होने वाली जुलाई क्रान्ति की प्रतिध्वनि यूरोप की तमाम रियासतों में सुनाई दी और यूरोप में फैलने वाले लोकप्रिय आन्दोलनों को प्रोत्साहित किया फलस्वरूप हर देश में स्वतंत्रता और स्वायत्त-शासन की स्थापना करने के लिए जनता ने अपनी आवाज उठायी। बेल्जियम, जर्मनी, इटली, पोलैंड आदि देशों में विद्रोह और आन्दोलन हुए।

स्विट्जरलैण्ड के शासन में सुधार लाकर वहाँ पर लोकतंत्रात्मक संविधान लागू किया गया। इंगलैण्ड में भी 1832 ई० में संसदीय सुधार अधिनियम बना जिससे वहाँ का शासन पहले की अपेक्षा अधिक उदारवादी हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा का अंत करके गरीब किसानों और मजदूरों की दशा सुधारने के लिए नियम बनाये गये। फ्रांस की क्रान्ति से उत्साहित होकर यूरोप के विभिन्न देशों में क्रान्तियाँ हुईं। बेल्जियम में क्रान्ति हुई जिसके फलस्वरूप बेल्जियम हालैण्ड से अलग होकर स्वतंत्र राज्य बन गया। इटली और जर्मनी में राजनीतिक एकीकरण की प्राप्ति के लिए स्थान-स्थान पर क्रान्तियाँ हुईं। क्रान्ति के प्रमुख सिद्धान्तों को सफलता मिली तथा प्रतिक्रियावादियों को पराजित होना पड़ा। क्रान्ति ने जनसाधारण को निरंकुशता का विरोध करने के लिए तैयार कर दिया तथा कुछ काल

⑥

पश्चात् ही यूरोप में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए जिनके कारण निरंकुशता का अन्त हो गया। 1830 ई० की क्रान्ति के पश्चात् होने वाली घटनाओं ने उसके महत्व को भलीभाँति स्पष्ट कर दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि फ्राँस की जुलाई क्रान्ति से पूरा यूरोप प्रभावित हुआ। निस्सन्देह इस क्रान्ति ने मैटरनिक तथा जारशाही की प्रतिक्रियावादी और निरंकुश प्रवृत्तियों पर गहरा आघात किया और 1848 की क्रान्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया। इस क्रान्ति ने स्पष्ट कर दिया कि निरंकुशता के द्वारा जनमानस के क्रान्तिकारी विचारों को अधिक दिनों तक दबाया नहीं जा सकता है।

The End